अमृत वचन

पवन कुमार शर्मा
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान , रूड़की

- संसार में सबसे दयनीय कौन है ? धनवान होकर भी जो कंजूस है ।(विद्यापति)
- मन की दुर्बलता से अधिक भंयकर और कोई पाप नहीं है । (विवेकानन्द)
- जैसे उल्लू को सूर्य नहीं दिखाई पड़ता , इसी प्रकार दुष्ट को भगवान नहीं दिखाई पड़ते । (स्वामी भजनानन्द)
- जो कार्य तुम आज कर सकते हो उसे कल पर कदापि मत छोड़ो । (फ्रैंकेलिन)
- जब दृढ़ता पर्याप्त है तो उतावलापन अनावश्यक है । (नेपोलियन)
- गीता के आधार पर अकेला मानव सारी दुनिया का मुकाबला कर सकता है । (विनोबा)
- समस्त भय और चिन्ता इच्छाओं का परिणाम है । (स्वामी रामतीर्थ)
- शरीर रोगी और दुर्बल रखने के समान दूसरा पाप नहीं है । (लोकमान्य तिलक)
- महान व्यक्ति न किसी का अपमान करता है और न उसको सहता है । (होम)
- मनुष्य का जीवन इसलिए है कि वह अत्याचार के खिलाफ लड़े । (सुभाष चन्द्र बोस)
- सबसे उत्तम तीर्थ अपना मन है जो विशेष रूप से शुद्ध किया हुआ हो । (शंकराचार्य)
- जनता सहनशील होती हैःजब तक प्याला भर न जाये वह जुबान नहीं खोलती । (प्रेमचंद)
- महान चरित्र का निर्माण महान और उज्वल विचारों से होता है । (स्वामी शिवानन्द)
- संसार में हमारा जन्म तभी तक सार्थक है जब तक हम विश्व से अनुराग रखते हैं । (रवीन्द्र नाथ ठाकुर)
- जो पुरूष हितकारी भोजन करता है , उसके लिए वह अन्न अमृत रूप हो जाता है । (महाभारत)
- यदि शासक किसी अवगुण को पसन्द करता है तो वह गुण हो जाता है । (शेखसादी)
- नारी नर की सहचरी , उसके धर्म की रक्षक , उसकी गृह लक्ष्मी तथा उसे देवत्व तक पहुँचाने वाली साधिका है । (डॉ. राधाकृष्णन)